साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 10, अंक : 26 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 29 जनवरी 2025 से 4 फरवरी 2025 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

संविधान कराता है गौरव और स्वाभिमान के साथ हमें अपने अधिकारों और कर्तव्यों का बोध- मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आज राष्ट्र के जन-गण-मन में देशभक्ति और देश के लिए गर्व का भाव सशक्त हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द मोदी के नेतृत्व-गुण के फलस्वरूप यह संभव हुआ है। आज संपूर्ण विश्व में भारत की गरिमा और साख बढ़ रही है। उन्होंने गणतंत्र दिवस के पावन पर्व पर राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए शहीद राष्ट्रभक्तों और सभी सेनानियों के चरणों में विनम्र श्रद्धांजली अर्पित की। उन्होंने कहा कि आज संविधान निर्माताओं के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करने का दिन है। हमारा संविधान गौरव और स्वाभिमान के साथ हमें अपने अधिकारों और कर्तव्यों का बोध भी कराता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि एक वर्ष में प्रदेश के चहुँमुखी विकास के साथ प्रदेश की जनता के हित में जन-सहयोग से जो कार्य हुए हैं, उनसे मध्यप्रदेश विकसित राज्य के रूप में पहचान बना रहा है। इस उपलब्धि का श्रेय प्रदेश के लगभग साढ़े आठ करोड़ नागरिकों को जाता है, जो इस पहचान के शिल्पकार रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी की मंशानुरूप विकसित भारत के लिए विकसित मध्यप्रदेश की हमारी यात्रा निरंतर चल रही है।

संविधान दिवस के माध्यम से हमारा राष्ट्र संविधान की महिमा को एक उत्सव के रूप में मनाता है। 76वां गणतंत्र दिवस समारोह उत्सव, उमंग और देशभक्ति के साथ हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जोश और जुनून के साथ उत्साह भरे वातावरण में इंदौर के नेहरू स्टेडियम में झण्डावंदन किया। उन्होंने परेड की सलामी ली। इस मौके पर विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा आकर्षक एवं नयनाभिराम झांकियां भी निकाली। स्कूली बच्चों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भारत के 76वें गणतंत्र दिवस के मंगल अवसर पर सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को भी शॉल-श्रीफल देकर सम्मानित किया। 76वें गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान देशभक्ति से ओतप्रोत अभूतपूर्व उत्साह का माहौल था। समारोह में 19 प्लाटूनों ने आकर्षक परेड प्रस्तुत की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्रध्वज फहराने के बाद खुली जीप से सम्पूर्ण परेड का निरीक्षण किया। उन्होंने परेड कमाण्डरों से परिचय भी प्राप्त किया। परेड के दौरान सशस्त्र दलों द्वारा हर्ष फायर किये गये। खुला आसमान तिरंगे के तीन रंगों से सराबोर हो गया। समारोह में परेड का नेतृत्व परेड कमांडर आईपीएस श्री आदित्य सिंघारिया ने किया। बीएसएफ के बैंड ने देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत राष्ट्रीय धुनों से सम्पूर्ण वातावरण को देशभक्ति से भर दिया।

गणतंत्र दिवस समारोह में शासकीय विभागों द्वारा राज्य शासन की योजनाओं, कार्यक्रमों पर आधारित नयनाभिराम झाँकियाँ निकाली गई। इनमें मुख्य रूप से नगर निगम इंदौर द्वारा स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत कचरे का रीड्यूस, रीयूज और रीसाइकल करना ताकि कार्बन उत्सर्जन को कम किया जा सके। समारोह में खजराना गणेश मंदिर, शिक्षा विभाग, कृषि विभाग, जिला पंचायत इंदौर, स्वास्थ्य विभाग, यातायात विभाग, पुलिस विभाग, मेट्रो रेल, उद्योग विकास निगम, केन्द्रीय जेल, जिला व्यापार उद्योग केन्द्र, महिला बाल विकास, वन विभाग, इंदौर विकास प्राधिकरण, आईटीआई और उद्यानिकी विभाग की शासकीय योजनाओं के लाभों को प्रदर्शित करती हुई झाँकियां निकाली गई। गणतंत्र दिवस समारोह में तीन विद्यालयों के बच्चों ने राष्ट्रीयता, देशभक्ति, एकता और सद्भावना पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सीएम राइज स्कूल अहिल्या आश्रम क्रमांक 02 की बालिकाओं ने देशप्रेम की भावना से सराबोर और राष्ट्रीय गीतों पर आधारित रंगारंग प्रस्तुति दी। माँ उमिया देवी पाटीदार कन्या स्कूल राऊ के बच्चों ने विभिन्न प्रान्तों के लोकनृत्य और लोकगीत पर आधारित मनमोहक प्रस्तुति दी। दिल्ली पब्लिक स्कूल के बच्चों ने देशभक्ति, साहस और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत गीतों पर रंगारंग प्रस्तुति दी। समारोह के दौरान उत्कृष्ट परेड प्रस्तुत करने पर प्लाटूनों को पुरस्कृत किया गया। अ वर्ग में प्रथम पुरस्कार 15वी वाहिनी विशेष सशस्त्र बल तथा द्वितीय पुरस्कार सीमा सुरक्षा बल को दिया गया। ब वर्ग में प्रथम पुरस्कार एनसीसी और द्वितीय पुरस्कार जिला यातायात पुलिस बल को प्राप्त हुआ। वर्ग का प्रथम पुरस्कार सृजन को तथा द्वितीय पुरस्कार रेडक्रास को दिया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिल्ली पब्लिक स्कूल को प्रथम, माँ उमिया देवी पाटीदार कन्या स्कूल राऊ को द्वितीय और अहिल्या आश्रम क्रमांक 02 को तृतीय स्थान मिला। इसी तरह झांकियों में प्रथम पुरस्कार नगर निगम, द्वितीय पुरस्कार औद्योगिक केन्द्र विकास निगम तथा तृतीय पुरस्कार केन्द्रीय जेल को दिया गया।

उत्सर्जन पर लगाम न लगी तो 2100 तक दुनिया भर में समुद्र स्तर में 1.9 मीटर तक की वृद्धि के आसार

मुंबई। एक शोध के मुताबिक यदि वैश्विक कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) उत्सर्जन की दर बढ़ती रही और उच्च उत्सर्जन परिदृश्य तक पहुंच गई, तो साल 2100 तक समुद्र का स्तर 0.5 से 1.9 मीटर के बीच बढ़ने की आशंका जताई गई है। इस अनुमान की सीमा संयुक्त राष्ट्र के नवीनतम वैश्विक अनुमान 0.6 से 1.0 मीटर से 90 सेंटीमीटर अधिक है। इस बात का अनुमान सिंगापुर की नानयांग टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी (एनटीयू) और नीदरलैंड की डेल्फ़्ट यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी (टीयू डेल्फ़्ट) के शोधकर्ताओं ने शोध में लगाया है।

शोध में इस बात की 90 फीसदी आशंका जाहिर की गई है, जो संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) द्वारा बताए गए समुद्र-स्तर में वृद्धि के अनुमानों से अधिक है, जिसने केवल 66 फीसदी तक के अनुमान जताया गया था। वर्तमान समुद्र-स्तर का अनुमान जलवायु प्रक्रियाओं को मॉडल करने के लिए कई तरीकों पर निर्भर करते हैं। कुछ में ग्लेशियर पिघलने जैसी सही से समझी जाने वाली घटनाएं शामिल हैं, जबकि अन्य में अचानक बर्फ की शेल्फ ढहने जैसी अधिक अनिश्चित घटनाएं शामिल हैं। नतीजतन, ये मॉडल अलग-अलग अनुमान देते हैं, जिससे समुद्र-स्तर में अत्यधिक वृद्धि का विश्वसनीय अनुमान लगाना मुश्किल हो जाता है। विभिन्न तरीकों से अनुमानों में इस अस्पष्टता ने आईपीसीसी को समुद्र-स्तर के अनुमानों के लिए बहुत संभावित सीमाएं प्रदान करने से रोक दिया है, जो खतरे के प्रबंधन में एक अहम मानक है।

अर्थ फ्यूचर नामक पत्रिका में प्रकाशित शोध में कहा गया है कि इस चुनौती से पार पाने और वर्तमान समुद्र-स्तर में वृद्धि अनुमानों में अनिश्चितताओं से निपटने के लिए, शोधकर्ताओं ने एक नई, बेहतर प्रक्षेपण विधि विकसित की जिसे फ्यूजन या जोड़ने के नजरिए के रूप में जाना जाता है। यह दृष्टिकोण मौजूदा मॉडलों की ताकत को विशेषज्ञों की राय के साथ जोड़ता है, जो भविष्य के समुद्र-स्तर में वृद्धि की एक स्पष्ट, अधिक विश्वसनीय तस्वीर पेश करता है। शोध पत्र में शोधकर्ताओं के हवाले से कहा गया है कि नया नजरिया समुद्र-स्तर के विज्ञान में एक अहम मुद्दे से निपटता है, समुद्र-स्तर वृद्धि का अनुमान लगाने के विभिन्न तरीके अक्सर व्यापक रूप से अलग-अलग परिणाम देते हैं। इन विभिन्न तरीकों को एक एकल फ्यूजन या संलयन प्रक्षेपण में जोड़ कर, इससे भविष्य के समुद्र-स्तर वृद्धि से जुड़ी अनिश्चितता का अनुमान लगा सकते हैं और समुद्र-स्तर वृद्धि की बहुत संभावित सीमा को माप सकते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि उनकी नई विधि विश्वसनीय जानकारी के लिए एक बहुत बड़ी कमी को पूरा करती है, जो आईपीसीसी की नवीनतम रिपोर्ट का पूरक है। शोधकर्ताओं ने आईपीसीसी की छठी मूल्यांकन रिपोर्ट में जारी किए गए अनुमानों के आंकड़ों का उपयोग किया, जो विभिन्न उत्सर्जन मार्गों के तहत संभावित भविष्य के परिदृश्यों का अनुकरण करता है। वहीं शोधकर्ताओं ने आईपीसीसी की रिपोर्ट में बताए गए अनुमानों के विभिन्न वर्गों को शामिल किया। शोध के मुताबिक, बर्फ की चादर के व्यवहार में अचानक बदलाव जैसी सही से न समझी गई चरम प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए, विशेषज्ञ आकलन द्वारा मध्यम विश्वास और कम विश्वास दोनों अनुमानों को शामिल किया। अनिश्चितताओं से निपटने के लिए कम-विश्वास वाले अनुमानों को शामिल करते हुए अधिक विश्वसनीय मध्यम-विश्वास वाले आंकड़ों को प्राथमिकता देते हुए एक भार प्रणाली लागू की गई। इस फ्यूजन दृष्टिकोण पर आधारित अनुमानों से पता चलता है कि कम उत्सर्जन परिदृश्य के तहत, वैश्विक औसत समुद्र का स्तर 2100 तक 0.3 और 1.0 मीटर के बीच बढ़ने का पूर्वानुमान है। आईपीसीसी की संभावित सीमा ने वैश्विक औसत समुद्र के स्तर में 0.3 से 0.6 मीटर की वृद्धि का अनुमान लगाया। उच्च उत्सर्जन परिदृश्य के तहत, एनटीयू फ्यूजन मॉडल अनुमान लगाता है कि वैश्विक औसत समुद्र स्तर 2100 तक 0.5 और 1.9 मीटर के बीच बढ़ जाएगा। आईपीसीसी की संभावित सीमा में 0.6 से 1.0 मीटर के बीच वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। एनटीयू मॉडल द्वारा शामिल व्यापक सीमाओं से पता चलता है कि पिछले अनुमानों ने चरम परिणामों की संभावना को कम करके आंका हो सकता है, उच्च उत्सर्जन मार्ग के तहत आईपीसीसी की संभावित सीमा के ऊपरी छोर से स्तर 90 सेमी अधिक हो सकता है।

शोध में कहा गया है कि नए संभावित अनुमान इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि समुद्र के स्तर में वृद्धि के मामले में अनिश्चितताएं कितनी बड़ी हैं। 1.9 मीटर का उच्च-स्तरीय अनुमान निर्णयकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के लिए उसके अनुसार योजना बनाने की आवश्यकता को सामने लाता है। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि सबसे अहम बात यह है कि ये परिणाम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करके जलवायु शमन के महत्व पर जोर देते हैं। सबसे चरम परिणामों की संभावना का अनुमान लगाकर, यह तटीय समुदायों, बुनियादी ढांचे और पारिस्थितिकी तंत्र पर समुद्र-स्तर की वृद्धि के गंभीर प्रभावों को सामने लाता है, जो जलवायु संकट से निपटने की तत्काल आवश्यकता पर जोर देता है। जलवायु परिवर्तन की तैयारी के लिए समुद्र के स्तर में वृद्धि का सटीक अनुमान जरूरी हैं। शोधकर्ताओं की टीम का मानना है कि उनकी नई विधि शहरी योजनाकारों और सरकारों के लिए अहम, कार्रवाई योग्य जानकारी प्रदान करती है, जिससे उन्हें कमजोर समुदायों की सुरक्षा के लिए योजना बनाने और उपायों को लागू करने में मदद मिलती है, खासकर समुद्र-स्तर में अत्यधिक वृद्धि के परिदृश्यों में। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया कि विभिन्न विश्वास स्तरों पर समुद्र-स्तर की जानकारी के सबसे सटीक उपलब्ध जानकारी को एक साथ जोड़कर भविष्य में समुद्र के स्तर में वृद्धि की पूरी अनिश्चितता सीमा को दिखाने का एक नया तरीका विकसित किया है। शोध में कहा गया है कि भविष्य में समुद्र-स्तर में वृद्धि की पूर्ण अनिश्चितता सीमा का अनुमान लगाने के लिए नई विधि को अन्य जलवायु अनुमानों और उससे आगे भी लागू किया जा सकता है, जिसमें तटीय इलाकों में बाढ़ के खतरे का आकलन, बुनियादी ढांचे की कमजोरी का विश्लेषण और आर्थिक तौर पर पड़ने वाले प्रभावों का पूर्वानुमान भी शामिल है।

कोयला भट्टी के उपयोग पर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड सख्त

इंदौर. मप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने कोयला, बायोकोल और भट्टी के उपयोग पर सत रुख अपनाया है। बोर्ड ने इनके बदले दूसरे विकल्प तलाशने को लेकर आदेश जारी किया है। इसके बाद इंदौर कार्यालय से उद्योग संचालकों को पत्र लिखा गया है। इसमें कोयला बायोकोल के बजाय गैस के उपयोग तलाशने की बात कही गई है।

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड इंदौर के डायरेक्टर एसके द्विवेदी ने बताया, सभी उद्योगों को समझाइश देने के लिए पत्र भेजा है। पहले सांवेर रोड स्थित इंडस्ट्रियल एरिया शहर के बाहर था, लेकिन अब यह क्षेत्र शहर के अंदर आ चुका है और इसके चारों ओर रहवासी इलाके भी बस गए हैं। इससे हवा में प्रदूषण बढ़ रहा है, जिसे नियंत्रित करने के लिए नगर निगम के साथ मिलकर लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया, इंडस्ट्री से होने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए बायलर में कोयले की बजाय गैस के उपयोग पर जोर दिया जा रहा है। इसके लिए संबंधित फैक्ट्री मालिकों से यह पत्र भेजकर उनकी समस्याओं के बारे में पूछा गया है, ताकि उनका समाधान किया जा सके और उन्हें सही विकल्प उपलब्ध कराया जा सके।

चीतों की ऐतिहासिक पुनर्स्थापना से हम गौरवान्वित हैं -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

कर्तव्य पथ पर गूंजी मध्यप्रदेश की शान, चीतों की ऐतिहासिक वापसी बनी आकर्षण का केंद्र

भोपाल 76वें गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय उत्सव में इस बार कर्तव्य पथ पर मध्यप्रदेश की झांकी ने देशवासियों का दिल जीत लिया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस उपलब्धि पर सोशल मीडिया %एक्स% पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा है कि चीतों का आगमन न केवल हमारे इको-टूरिज्म को प्रोत्साहन देगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। %चीतों की ऐतिहासिक वापसी% पर आधारित झांकी ने न केवल राज्य की समृद्ध जैव विविधता को उजागर किया, बल्कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शुरू की गई %चीता पुनर्वास परियोजना% की सफलता को भी उत्कृष्टता से रेखांकित किया। झांकी में कूनो नेशनल पार्क और वहां बसे चीतों को दिखाया गया, जिन्होंने मध्यप्रदेश को %चीता स्टेट% के रूप में पहचान दिलाई है।

वर्ष 2023 के सितंबर में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अपने जन्मदिन के अवसर पर कूनो नेशनल पार्क में नामीबिया से लाए गए चीतों को पुनर्स्थापित कर एक नया इतिहास रचा। यह परियोजना भारत के वन्य-जीव संरक्षण के व्यापक प्रयासों में एक मील का पत्थर मानी जा रही है। चीतों के सफल पुनर्वास ने मध्यप्रदेश को वैश्विक मंच पर नई पहचान दिलाई है। झांकी में चीतों के

कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन कम करने की शपथ लेने का दिन है

मुंबई। हर साल 28 जनवरी को, दुनिया एक साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) उत्सर्जन न्यूनीकरण दिवस मनाती है। दुनिया भर में यह दिन जलवायु परिवर्तन से निपटने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए ठोस उपाय अपनाने तथा हमारे ग्रह को संरक्षित करने के लिए टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मनाया जाता है।

जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारणों में से एक वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में निरंतर वृद्धि है, जिसके कारण लगातार स्पष्ट होते जा रहे हैं, जो आम तौर पर चरम मौसम की घटनाओं, मौसम के पैटर्न में बदलाव और समुद्र के स्तर में वृद्धि के रूप में सामने आते हैं। ग्रीनहाउस गैस या सीओ2 उत्सर्जन को कम करने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता 150 से अधिक सालों से वैज्ञानिकों के रडार पर है। 1856 में अमेरिकी वैज्ञानिक यूनिस न्यूटन फूटे ने भविष्यवाणी की थी कि गैस के वायुमंडल में परिवर्तन पृथ्वी की सतह के तापमान को बदल सकते हैं। फिर 1896 में, स्वीडिश वैज्ञानिक स्वान्ते अरहेनियस ने ग्लोबल वार्मिंग की भविष्यवाणी की और पांच साल बाद निल्स गुस्ताफ एकहोम द्वारा ग्रीनहाउस प्रभाव शब्द गढ़ा गया। 1938 तक, गाइ कैलेंडर नामक एक वैज्ञानिक ने यह संबंध स्थापित कर लिया था कि सीओ2 उत्सर्जन में वृद्धि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से संबंधित थी। वास्तव में यह 1824 में किए गए शोध से भी संबंधित था जब जोसेफ फूरियर ने गणना की थी कि सूर्य के साथ अपने स्थितिगत संबंध में पृथ्वी के आकार का एक ग्रह वास्तव में उस समय की तुलना में बहुत ठंडा होना चाहिए, यह सुझाव देते हुए कि किसी प्रकार का इन्सुलेशन या कंबल होना चाहिए जो पृथ्वी को गर्म रखता हो। जैसे-जैसे वैज्ञानिक ग्रह पर ग्रीनहाउस का प्रभाव और ओजोन परत के नुकसान के प्रभाव का अध्ययन करना जारी रखते हैं, वैसे-वैसे ग्लोबल वार्मिंग के और भी सबूत सामने आते हैं, जिसमें समुद्र का बढ़ता स्तर, बढ़ता सूखा, जंगल की भयंकर आग, पानी की आपूर्ति में कमी और बहुत कुछ शामिल है। जब 1997 में क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए थे, तो यह औद्योगिक देशों से ग्रीनहाउस गैसों की कमी की दिशा में सही कदम उठाने के लिए कहा गया था। फिर भी, यह दर को तेजी से धीमा करने के लिए काफी नहीं रहा।

जब 2015 में पेरिस समझौते को अपनाया गया, तो इसने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करके ग्लोबल वार्मिंग को सीमित करने की प्रतिबद्धता में 196 देशों को कानूनी रूप से बाध्य किया। इसका लक्ष्य 21वीं सदी के मध्य तक जलवायु तटस्थ ग्रह हासिल करना है। अंतर्राष्ट्रीय सीओ2 उत्सर्जन में कमी दिवस दुनिया भर के लोगों को अपने कार्बन पदचिह्न को कम करके पर्यावरण और ग्रह की देखभाल करने में अपना योगदान देने के लिए जागरूकता बढ़ाने और प्रोत्साहित करने के लिए है। ह दिन न केवल हमें उन चुनौतियों की याद दिलाता है जिनका हम सामना कर रहे हैं, बल्कि कार्रवाई का आह्वान भी है। हर छोटा योगदान मायने रखता है और व्यक्तिगत प्रयास दुनिया भर में कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को कम करने में अहम प्रभाव डाल सकते हैं। साथ मिलकर और जीवाश्म ईंधन के बजाय हाइड्रोजन के उपयोग द्वारा पेश किए गए नजरियों का फायदा उठाकर, हम भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और अधिक न्यायसंगत दुनिया का निर्माण कर सकते हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008